

सम्यक् रत्नत्रयधर्म पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(दोहा)

चहुंति-फनि-विष-हरन-मणि, दुख-पावक-जल-धार ।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्-त्रयी निहार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक-सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा ।

चन्दन केशर गारि, परिमल-महा-सुगन्ध-मय ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

तन्दुल अमल चितार, वासमती-सुखदास के ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करें ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।

दीप-रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में ।

जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा ।